International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 7.328
Vol.9 No.2 Nov – Dec 2021

समकालीन हिन्दी कविता में पर्यावरण विमर्श

डॉ. संतोष वसंत कोळेकर

कोल्हापुर

सारांश

धरती पर जीवन के लालन पालन के लिए पर्यावरण प्रकृति का उपहार है। वह प्रत्येक तत्व जिसका उपयोग हम जीवित रहने के लिए करते हैं वह सभी पर्यावरण के अन्तर्गत आते हैं जैसे-हवा, पानी, प्रकाश, भूमि, पेड, जंगल और अन्य प्राकृतिक तत्व। हमारा पर्यावरण धरती पर स्वस्थ जीवन को अस्तित्व में रखने के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

हिन्दी साहित्य में प्रकृति एवं पर्यावरण का हमेशा अहम स्थान रहा है। आज पर्यावरण ज्वलंत समस्या है लिहाजा साहित्य भी इससे अछूता नहीं। साहित्य में पर्यावरण की चिंता विविध रुपों में सामने आ रही है। कहानी गीत, कविता, तमाम विद्याओं में लेखक पर्यावरण के प्रति अपनी चिंता जता रहे हैं। पकृति और मानव का संबंध उतना ही पुराना है जितना सृष्टि के उद्‌भव और विकास का इतिहास। प्रकृति की गोद में ही प्रथम मानव शिशु ने आँखे खोली और उसी की गोद में खेल कर बड़ा हुआ। हमारे विकास और विज्ञान के सारे पैमाने इसी प्रकृति के बूते ही बनाये गए। मानव और प्रकृति के इस अटूट संबंध की अभिव्यक्ति भारतीय धर्म, दर्शन, साहित्य और कला में चिरकाल से व्याप्त है। साहित्य मानव जीवन का प्रतिबिंब है और उस प्रतिबिंब में उसकी सहचरी प्रकृति का प्रतिबिंब का होना स्वाभाविक है।

पर्यावरण सौन्दर्यशास्त्र में संकलनत्रय (देश-काल-वातावरण), प्रतिपाद्य, पृष्ठभूमि आदि का रुप ले लिया है। अमरीकी चित्रकार बेन शान (Ben Shan) का अन्धा समस्या विज्ञानी चित्र में अंधा सस्थ विज्ञानी का प्रतिपाद्य विषय प्रयोगशाला सम्बन्धी विश्लेषण के लिए पौधे की जड़ से उखाडकर अपने हाथ में पौधे लिए हुए एक व्यक्ति का है - यह सचमुच आधुनिक मानव संस्कृति को जड से उखाडकर, उसकी ही समझ से अनवगत स्थिति का द्योतक है। वास्तव में काम्पनिकता परिवेश जन्य व्याख्यान ही हैं।

प्रस्तावना:

समकालीन हिन्दी कविता में पर्यावरण विमर्श :

काव्य का प्रमुख गुण "आर्जवम्" है आर्जवम् संस्कृत का शब्द है। हिन्दी में यह 'आपत' बन गया है। पुराने जमाने में यह शब्द-आर्द्रता, स्पष्टता भावों के लिए प्रयुक्त किया जाता था लेकिन आज शिल्प प्रयुक्त किया जाता है। लेकिन आज शिल्प के बारे में बताने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। टी.एस. इलियट ने अपने 'काव्य वेस्ट लेन्ड' में इस प्रकार पर्यावरण विमर्श का चित्र सींचा है : River Sweet Oil Tar वैसे देखा जाए तो विश्व साहित्य में समय-समय पर कविताओं की नाटकीय संरचना में परिवेश की पूरी हिस्सेदारी है। परिवेश का आंतक भय, विद्रुपता एवं आत्मनिर्वसन को कवियों ने नए-नए अंदाज में उजागर किया है।

समकालीन हिन्दी कविता के कथ्य में परिवेश का रंग गाढा है, अकेले धूमिल का ही उदाहरण ले तो पटकथा मोचीराम, राजकमल चौधरी के प्रसंग में, अकालदर्शन, गाँव प्रोढ शिक्षा जैसी कविताएँ परिवेश का इतिहास-भूगोल पूरी प्रामाणिकता से प्रस्तुत करती हैं।

सामाजिक आवश्यकता के प्रति आस्थावान सफल समकालीन कवि, केदारनाथ अग्रवाल, कबीर, सुर, जायसी, तुलसीदास आदि। हिन्दी प्रदेश हवा, पानी, मिट्टी, नदी-नाले, पेड़-पौधे, पक्षी, खेत-खलिहान, ढोर-जानवर, इल-बैल, किसान-मजदूर, शोषक-शोषित, आदि की छवियो और लोक-लीलाओं की ही इकाई है। पुरवा और पछुआ हवाओं से आर्द्र और संतप्त यह ''गायक्षेत्र'' अपनी उदाहरता और संकीर्णता के साथ जिस कवि में झलकता है, जिसे मथता और चिंतित करता है वही हिन्दी जाति का कवि होता है। हिन्दी जाति की चिन्ता का स्वाभाविक विकास है – केदारनाथ अग्रवाल रचना अपने समय की प्रसव पीड़ा से ही जनमती है।

हिन्दी कविता में इस बीच बहुत-परिवर्तन हुए। परिवर्तन करने और उसके लिए ठोस जमीन बनाने वालों में भी वे रहे हैं। केदारनाथ इस जडीभूत होती हुई सौन्दर्यभिरुचि के समय में भी औद्योगिक सभ्यता से अप्रभावित रहते हुए प्रकृति के साथ अपना जीवित रिश्ता बरकरार रखते हुए बडी सहजता के साथ उजागर किया है। उनकी कविताओं में रागबद्ध संसार मिलता है और यह रागबद्ध दुनिया जहाँ अनेक लोगों को उनसे जोडती है, वहीं उनकी कविता को अनुराग-रंजित करती रहती है। 'केन' हर कविता में वही केन नहीं है। टुनटुनिया पहाड़ जिस पर चढ़कर नागार्जुन को पूरा गन्धर्व लोक नजर आया है हर कविता में नया लगता है। हर बार एक बदला हुआ लगता है क्योंकि हर बार-कविता में वह नये राग से प्रदीप्त हो उठता है, नई प्रतीति से रंग जाता है। प्रकृति का यह मानवीकरण छायावाद में भी है। लीलाधर मंडलोई की एक पद्य कविता है ''धरती की सुगन्ध'' वह लोक सौन्दर्य एवं भारतीयता की दृष्टि से काफी चर्चित कविता है, इसमें से व्यापक भारतीय संदर्भ भी निकाला जा सकता है। लोकतत्व एवं भारतीयता का सही संतुलन इसमें नजर आता है।

''पिछवाडे कई पौधे है और दो एक पेड। एक पौधा तुलसी का जिस पर पानी चढाने और दिया बराने का संसार है.... एक तीसरी झाडी-सा सधन पुराना पौधा है - संतोष का। तीखी अकल्पनीय गंध में डूबा जिसके पास पहुँचते ही चेतना खोने लगती है। दुष्टात्माओं से रक्षा के लिए रोपा था इसे दादी ने। वह बढता ही गया कि जैसे दुष्टात्माएँ।''

सत्य की खोज कथा-में एकांत श्रीवास्तव दर-दर भटकने के बावजूद 'सत्य' से साक्षात्कार नहीं कर पाते-सत्य हमें अरण्य-अरण्य भटकाता है। कंचन-मृग-सा भरमाता है.... कि अरे, यह तो ही है - जिजसे बचकर हम यहाँ तक आँए है।

इन कविताओं में केवल परिवेश के प्रति सजगता ही नहीं बल्कि इनमें परिवेश के प्रति प्रतिबद्ध दृष्टिकोण भी हैं, अधिकांस-कविताओं में नदी को प्रतिकात्मक रुप में चित्रित किया गया है। भारत अनगिनत छोटी बडी नदियों का देश है और साथ ही उन नदियों से जुडी अनगिनत कविताओं का भी तो यह अतियोक्ति न होगी।

सर्वश्वरद्रपाल सक्सेना के कविता में बहती ''कुआनो नदी'' हो अथवा केदारनाथ अग्रवाल की ''केन'', भवानी प्रसाद मिश्र के द्वारा खींचे हुए ''नर्मदा के चित्र'' हो या त्रिलोचन के ''सानेटो'' में बहती गंगा अथवा विनोदकुमार शुक्ल की ''कटक'' हो, नदियों पर लिखी हुई कविता जीवन की कविता है - निरंतर बहती हुई प्रागवान और सरस। गंगा, यमुना, महानदी, निरीथ, सोन, केन, नर्मदा, सहस्त्रधारा, स्वर्णरेखा, तापी, सरयू, गोमती, ब्रह्मपुत्र, रेब, इदावती, चंबा, वितस्ता, सिंधु इन नदियों को लगातार बहती धारा ने न केवल भारतीय आम लोगों को ही प्राणवान नही किया है बल्कि अनगिनत कवियों ने इसके किनारे बैठ अपनी कविता पर साथ चढ़ाया है। कवि और इसकी कविता आखिर नदी का किनार क्यो न खोजेगी। आखिर कविता भी तो एक नदी है, नदियों की ही तरह दूसरों के लिए बहती बनती हुई। लेकिन यह जरुर है कि गंगा

जैसी नदियों ने कवियों को सर्वाधिक प्रभावित किया है। आखिर हो भी कणे नहीं वह नदी भारतीय सांस्कृतिक चेतना के अंदर गहरे तक समायी हुई नदी है, क्योंकि गंगा केवल एक नदी भर नहीं है। यह हमारी दिनचर्या का हिस्सा बन गई है। लेकिन यह दुस्वद है और विडंबनापूर्ण भी कि इसके जल ने शुचिता प्रदुषण की समस्या को पुनर्षलित ही किया है। समय की मांग है कि गंगा, यमुना के साथ कोशी जैसी नदियों के जल को भी वही न्याय मिले, वही सम्मान मिले।

युवा कवियों की कविता में लगातार नदियाँ बह रही हैं। जयप्रकाश नारायण का ''समस्त आकाश मे'' काव्य संग्रह की एक बडी खूबी यह है कि कवि की अधिकांश कविताओं में सूखा झील, नदियाँ झील, नदियाँ, समुंदर, पेड, फूल, रेत और प्रकृति के दूसरे रंग भी दिखाई देते है। उनकी कविताओं में शहर तो है, पर कम है। शहरों में जहाँ आकाश पर उगते भोर के सूरज को देखना एक सपने जैसा हो गया है। वहाँ जयप्रकाश नारायण अभी भी आकाश में सुनहरी सुबह के सुरज के उगने की आस लगाए बैठे हैं। इसके अलावा अनिलकुमार सिंह की ''पहला उपदेश'', श्रीप्रकाश शुक्ल की संग्रह ''जहाँ कोई शहर नहीं होता'', सुन्दचन्द ठाकुर का संग्रह ''किसी रंग की छाया'' और रामाज्ञा राय ''शशिधर'' का ''विशाल ब्लेड पर सोई हुई लडकी'' इन सारे काव्य संग्रह में प्रकृति का निरुपण पडी सहजता से हुआ है और प्रकृति में घटित होने वाली घनाओं को भी बडे अच्छे से उद्घाटित किया है।

इस प्रकार से प्रकृति का वर्णन अनेक वर्षो से, सभी काल में, कविता के माध्यम से किया जाता रहा है। आज के प्ररिवर्तनशील परिस्थितियों को केन्द्र में रखकर अनेक कवियों ने अपने-अपने तरीके से समकालीन हिन्दी कविता में प्रकृति का बहुत ही सजीव चित्रण किया है। बढ़ते हुए प्रदुषण के कारण पर्यावरण असंतुलित होता जा रहा है जिसके प्रति सामाजिक कार्यकर्ता, वेज्ञानिक आदि कई तरह कवि और साहित्यकार भी काफी चिंतिथ है। ये लोग अपने कविताओं और साहित्य के माध्यम से पर्यावरण के प्रति अपनी चिंता व्यक्त किया है। समकालीन कविता वास्तव में पर्यावरण के प्रति अपनी चिंता व्यक्त किया है। समकालीन कविता वास्तव में पर्यावरण त्रासदी का पुत्र है जिसे अनेक कवियों ने अनेक कवियों ने अपने काव्य का विषय बनाया है।

संदर्भ सूची :

१. समकालीन हिन्दी साहित्य में पर्यावरण विमर्श, डॉ. ए.एस. सुमेष अमन, प्रकाशन कानपुर।
२. यहाँ थी वह नदी, मंगलेश उबराला, सेतु प्रकाशन, नई दिल्ली।
३. http:/www.google.com